# 91 नज़रे बद और जादू

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफे अल्लाह तआला के लिए हैं। जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर आपकी आल व औलाद और असहाब रजि. पर।

व बअद!

### 'नज़रे बद' की हक़ीक़त

बुरी नज़र लग जाना एक सच्चाई है। इसे ही आमतौर पर नज़रे बद या चश्में बद भी कहा जाता है। यह दो तरह की होती हैं।

(1) इन्सान की नज़रे बद (2) जिन्नात की नज़रे बद

हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह0 ने सूरह युसुफ़ की आयत 67–68 की तफ़्सीर में लिखा है कि "अल्लाह तआला याकूब अलैहि0 का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि उन्होंने जब बिन्यामिन समेत अपने सभी बेटों को मिस्र जाने के लिए तैयार किया तो उन्हें हुक्म दिया कि वोह सब शहर के एक ही दरवाज़े से दाख़िल होने के बजाए अलग–अलग दरवाजों से शहर में दाखिल हों क्योंकि हज़रत इब्ने अब्बास रजि. मुहम्मद बिन कअब रह0, मुजाहिद रह0, दहाक रह0, क़तादा रह0, और सुद्दी रह0 के बकौल उन्हें 'नज़रे बद' का डर था और यह डर इस वजह से था कि वोह सारे बेटे बहुत खूबसूरत व सेहतमन्द थे। इसलिए याकूब अलैहि0 डरे कि कहीं उनके बेटे लोगों की नज़रे बद का शिकार न हो जाएं। नज़र का लग जाना हक़ हैं जो घुड़ सवार को घोड़े से भी गिरा दिया करती है।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–2 सफ़ा–09)

और सूरह क़लम आयत–51 की तफ़्सीर में लिखते हैं कि इब्ने अब्बास रजि. और मुजाहिद रह0 का कौल है कि "कुफ़्फ़ार तो अपनी आंखों से घूर–घूर कर तुझे फिसला देना चाहते हैं। अगर अल्लाह की तरफ़ से हिमायत व बचाव न होता तो यक़ीनन वोह ऐसा कर गुज़रते।"

(तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–5 सफ़ा –467)

### नज़रे बद के बारे में चन्द अहादीसे रसूल सल्ल0

(1) "नज़रे बद बरहक़ है। अगर तक़दीर से कोई चीज़ सबक़त ले जा सकती है तो वह नज़रे बद है। जब तुम में से किसी शख़्स से गुसल करने के लिए कहा जाए तो वह गुसल करे।"

(मुस्लिम–5702 – तिर्मिज़ी–2062 इब्ने माजा–3510)

(2) "नज़रे बद, ज़हरीले डंक और फोड़े – फुन्सियों से बचने के लिए दम झाड़ की इजाज़त है।"

(मुसिलम–5724 –इब्ने माजा–3516 – तिर्मिज़ी–2056)

(3) "हासिद (जिसकी नज़र लगी है) को वुजू करने का हुक्म दिया जाए। फिर उस (इस्तेमाल शुदा) पानी से मेहसूद (जिसको नज़र लगी हो) को नहलाया जाए।"

(अबु दाऊद–3876)

(4) "नज़रे बद के तोड़ के लिए दम करें।"

(मुस्लिम–5720 – बुख़ारी –5738)

(5) अबु उमामा रजि. कहते हैं कि आमिर बिन रबीआ रजि. ने सहल बिन हनीफ रजि. को गुस्ल करते हुए देखा तो कहा वल्लाह! मैंने आज तक इतनी खूबसूरत जिल्द किसी कुवारी (लड़की) की भी नहीं देखी।

अबु उमामा रजि. कहते हैं कि सहल रजि. को दौरा पड़ गया और वह वहीं गिर पड़े। अल्लाह के रसूल सल्ल0 आमिर रजि. के पास आए और डांटते हुए फरमाया "तुम में से कोई शख़्स अपने भाई को कत्ल करने पर क्यों आमादा हो जाता है? तुमने (उस की खूबसूरती देख कर) बरकत की दुआ क्यों न दी? चलो! उसके लिए गुस्ल करो।"

(अबुदाऊद–3888 – मौत्ता मालिक–1688)

## जिन्नात की नज़रे बद

(1) उम्मे सलमा रजि. बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनके हां एक लड़की देखी। जिसके चेहरे पर काला या नीला निशान था। आप सल्ल0 ने फ़रमाया "यह जिन्नात की नज़रे बद का शिकार हुई है, इस पर दम करों।" (मुस्लिम–5725 – बुख़ारी–5739)

(2) अबु सईद खुदरी रजि. कहते हैं कि "नबी सल्ल0 जिन्नात और इन्सानों की नज़रे बद से पनाह मांगा करते थे।" (इब्ने माजा–3511–तिर्मिज़ी–)

इब्ने कुय्यिम रह0 कहते हैं कि "कुछ लोगों का यह कहना कि नज़रे बद की कोई हकीकत नहीं। न ही किसी हासिद की नज़र में इतनी ताक़त होती है और न ही इस की कोई वजह है। यह लोग तमाम बातों को झूट व ग़लत करार देते हैं। दर हकीकत यही जाहिल किस्म के लोग हैं। जिनहोंने तमाम दानिश वराने उम्मत की मुख़ालिफ़त का बीड़ा उठा रखा है।"

(ज़ादुल मआद–जिल्द–3 सफा–394)

इब्ने क़य्यिम रह0 आगे फरमाते हैं "नज़रे बद बुनियादी तौर पर इस तरह लगती है कि हसद करने वाले का नापाक जिस्म मेहसूद (जिसे नज़र लगी है) के जिस्म को छू जाता हैं। कभी यह बुरी नज़र दोनों के आमने –सामने आने की वजह से लगती है तो कभी तअवीजात, मन्तर और झाड़–फुंक के ज़रिये। बल्कि कभी अन्धे शख़्स के सामने किसी की खूबिया बयान की जाएं और उस (अन्धे) शख़्स के नफ्स में हासिदाना जज़बात पैदा हो जाएं तो उसका असर भी हो सकता है।"

(जादुल मआद–जिल्द–3 सफा – 394)

## नज़रे बद से बचाव के तरीके

हाफ़िज़ इब्ने कय्यिम रह0 कहते हैं कि "जब किसी शख़्स को लगे कि उसकी नज़र की तासीर काफ़ी ज़्यादा है और यह किसी को लग सकती है। तो उसे चाहिये कि जब भी किसी अच्छी चीज़ को देखे तो "अल्ला हुम्मा बारिक अलैहि" यानि "या अल्लाह इसे बरकत दे" पढ़े जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सहल बिन हनीफ रजि. को नज़र लग जाने पर आमिर बिन रबीआ रजि. से कहा था।" (मालिक–1687)

इसी तरह "माशाअल्लाहु ला कूवता इल्ला बिल्लाह" यानि जो अल्लाह चाहे और बिना अल्लाह की तौफीक के कुछ नहीं हो सकता। पढ़े (तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–3 सफा–137)

इब्ने क़य्यिम रह0 के मुताबिक 'नज़रे बद' से बचाव का एक तरीका

यह भी है कि जिस्म के उस हिस्से को जिस पर नज़र लग जाने का अन्देशा हो, उस शख़्स से छिपा कर रखा जाए जिसकी की नज़र लग जाने का शक हो। जैसा कि इमाम बग़वी रह0 ने शरह अल सुन्नः में लिखा है कि उसमान रजि. ने एक खूब सूरत बच्चा देखा तो फ़रमाया "इसकी ठोढ़ी के नीचे काला टीका लगा दो, ताकि इसे बुरी नज़र न लगे।"
(जादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–402)

## नज़रे बद लग जाने के बाद इलाज

(1) **तऊज़ात के ज़रियेः**–सूरह 'इख़लास' सूरह 'फलक़' और सूरह 'नास' पढ़ कर दम किया जाए।" (अबु दाऊद–3884)
सूरह फ़ातिहा और आयतल कुर्सी वग़ैरह के अलावा यह दुआएं भी पढ़ना चाहिये।
(1) "आऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़" (मुस्लिम–6880 –अहमद–8867)
(2) "आऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन कुल्लि शैतानिवं व हाम्मतिन व मिन कुल्लि ऐयनिन ला आम्मतिन"
(बुख़ारी–3371 –तिर्मिज़ी–1878 – इब्ने माज़ा–3525)
(3) "बिस्मिल्लाहि अरक़ीका मिन कुल्लि शैइन यूअज़ीका, मिन शर्रा कुल्लु नफ़्सिन, औ एयनि कुल्ला हासिदिन, अल्लाहु यशफ़ीका, बिस्मिल्लाहि अरक़ीका"(मुस्लिम–5700 – इब्ने माज़ा–3523)
(2) कुरआनी आयात पानी में भिगो कर पिलानाः–

हाफ़िज इब्ने क़य्यिम रह0 कहते हैं "सलफ़ सालिहीन में से एक गिरोह की यह राय है कि जिस शख़्स को बुरी नज़र लगी हो, उसे कुरआनी आयात लिख कर, फिर उसे पानी में भिगो कर, वह पानी पीने के लिए देना चाहिये।

मुजाहिद रह0 कहते हैं कि ऐसा करने में कोई हरज नहीं है। जबकि दूसरा गिरोह यह कहता है कि कुरआनी आयात पढ़ कर पानी पर दम किया जाए और वह पानी मरीज़ को पिला दिया जाए। यह राय इसलिए बेहतर है क्यों कि पहली राय पर अमल करने में कुरआन की बेअदबी का अन्देशा है।
(ज़ादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–400)

## (3) गुस्ल का तरीक़ा

इब्ने क़य्यिम रह0 के मुताबिक़ 'नज़रे बद' के इलाज का एक तरीक़ा यह भी है कि "जिस शख़्स की नज़र लगी है, उसे कहा जाए कि वह अपना चेहरा, हाथ, कोहनियां, घुटने, पांव और नाफ़ के नीचे के अअज़ा को इस तरह धोए कि इस्तेमाल शुदा पानी ज़मीन पर गिर कर बहने के बजाए किसी बर्तन (टब वग़ैरह) में गिरे।

फिर उस पानी को मरीज़ के सर पर पीछे की तरफ़ से एक ही दफ़ा बहा दिया जाए।
(जादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–400)

## जादू की तअरीफ़ :–

**जादू**
अरबी ज़बान में सहर (जादू) हर ऐसी चीज़ को कहा जाता है जो बारीक हो और उसका सबब पोशीदा हो। (तफ़सीर इब्ने कसीर–जिल्द–1 सफ़ा–173)
जबकि इब्ने क़य्यिम रह0 की नज़र में जादू मुख्तलिफ़ [illegible] रूहों से [illegible] पाने वाली एक ऐसी [illegible] है जो इन्सानी तबियत को मुतअस्सिर करती है

(ज़ादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–363)
अज़ लोगों की राय में जादू हकीक़त में कुछ नहीं, बल्कि ख़्यालात का हसास व फ़रेबे नज़र है। जबकि इमाम कुर्तुबी रह0 कहते हैं "जादू बरहक है और जब अल्लाह को मन्जूर हो, वह अपना असर दिखाता है।"

इब्ने कसीर रह0 बयान करते हैं कि "अहले सुन्नत जादू के वजूद के क़ायल है। उनकी एक दलील तो यह है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर जादू किया गया।" जिसकी वजह से आप सल्ल0 को यह मेहसूस हो ता था कि आप सल्ल0 अपनी बीवियों के पास गए हैं।, जबकि हकीक़त में ऐसा नहीं होता था।"(जादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–360) दूसरी दलील यह है कि " जो लोग सूद खाते हैं , वोह क़यामत के दिन इस तरह खड़े होंगे जैसे शैतान ने लिपट कर बावला कर दिया हो।" (बक़राह, आयत –275) क़ाज़ी अयाज़ रह0 ने कहा कि "जादू दूसरी बीमारियों की तरह एक बीमारी ही है, जो इन्सान को पेश आती है।" (जादुल मआद–जिल्द–3 सफ़ा–360)

जादू का सीखना

इब्ने अब्बास रजि0 ने फ़रमाया "जब दो फ़रिश्तों (हारूत व मारूत) के पास कोई शख़्स जादू सीखने जाता तो वह उसे सख़्ती से मना करते और कहते कि हम तो आज़माइश (के लिए) हैं, पस! तू कुफ़्र न कर।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–1 सफ़ा–168)

जादू के बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि –"जो शख़्स भी अर्राफ़ या काहिन के पास गया। उसने मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल की गई शरीअत का इन्कार किया।" (इब्ने माज़ा–639)
और यह कि "जिसने गिरह बांधी, फिर उसमें झाड़–फूंक की तो गोया उसने कुफ़्र किया।" (नसाई–4084)

रसूल सल्ल0 ने "अल्लाह के साथ शिर्क करना, किसी को नाहक़ क़त्ल करना, सूद खाना, लड़ाई (जिहाद) से भागना पाक दामन मोमिना औरत पर तोहमत लगाना जैसे बड़े गुनाहों में जादू सीखना–सिखाना भी बतलाया है।" (बुख़ारी–5764, 6857)

## जादू के बारे में शरई हुक्म

इब्ने तीमिया रह0 कहते हैं कि "अल्लाह के क़ुरआन, नबी सल्ल0 के फ़रमान और इज्माए उम्मत से यह बात साबित है कि जादू करना हराम है। बल्कि अक्सर उलैमा के नज़दीक जादूगर काफ़िर है और उसे क़त्ल करना वाजिब है। क्योंकि उमर रज़ि, उसमान रजि. उम्मुल मोमिनीन हफ़सा रजि., इब्ने उमर रजि. और अब्दुल्लाह बिन जुनदुब रजि. से जादूगर को क़त्ल करना साबित है। जुन्दुब रजि. के मुताबिक तो रसूल सल्ल से भी जादूगर को क़त्ल करना साबित है।"

(मजमूआ अल फ़तावा–जिल्द–29–सफ़ा–211)
हज़रत उमर रजि. ने अपने आमिलों को लिखा कि "हर जादुगर मर्द व औरत को क़त्ल कर दो।" (बुख़ारी

जादू सीखने वाले और उस पर अमल करने वाले को इमाम अबु हनीफ़ा रह0 इमाम मालिक रह0 और इमाम अहमद बिन हम्बल रह0, 'काफ़िर' कहते हैं और इमाम शाफ़ई रह0 कहते हैं कि "अगर जादूगर जादू को जाइज़ मानता हो, तो काफ़िर है।"
(तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–1 सफ़ा–178)

## जादू की अक़साम

(1) बन्दिश का जादूः—इस तरह के जादू में मर्द को उसकी बीवी से रोक दिया जाता है। यानि मर्द को ऐसा लगता है कि वह बीवी से सोहबत कर सकता है, मगर जब बीवी के क़रीब जाता है तो सोहबत करने में नाकाम रहता है। कभी मर्द यह समझता है कि मैं बीवी से मिल चुका हूँ जबकि हक़ीक़त में उसने सोहबत नहीं की होती। कभी ऐसा ही सब बीवी के साथ गुज़रता है, अगर उस पर जादू किया गया हो।

वहब रह0 कहते है, "बेरी के सात पत्ते ले कर सिल बट्टे पर कूट लिये जाएं , फिर उन्हें पानी में मिला दिया जाए। इसके बाद 'आयतल कुर्सी' (सूरह बक़राह—आयत—255) पढ़ कर उस पर दम कर दिया जाए फिर जिस पर जादू किया गया है, उसे यह पानी तीन घूंट पिलाया जाए और बाक़ी पानी से उसे गुस्ल कराया ज़ाए। यह अमल ख़ास तौर पर उस शख़्स के लिए बेहद फ़ायदे मन्द है जिसे अपनी बीवी (या जिस औरत को अपने शोहर) से मिलने से रोक दिया गया हो। (तफ़्सीर इब्ने कसीर—जिल्द—1 सफ़ा—179)

**(2) जुदाई का जादूः**—यह वह जादू है जिसके ज़रिये जादूगर मियां बीवी के बीच जुदाई डाल देता है। चुनाचे जब किसी पर जादू हो जाता है तो उनकी गहरी मुहब्बत शदीद नफ़रत में बदल जाती हैं। कभी मर्द को उसकी बीवी बद सूरत लगने लगती है। तो कभी वह बीवी से दूर रहना पसन्द करने लगता है और कभी यह होता है कि बीवी को मर्द अच्छा नहीं लगता या कभी किसी दूसरे तरीक़े से उन दोनों में जुदाई पड़ जाती है। इसी जादू का जिक्र अल्लाह ने इस तरह किया है " जिससे मियां – बीवी के बीच जुदाई डाल दें।"

(बक़रह— आयत—102) "शैतान के नज़दीक उसके लश्कर में से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह होता है जो मियां—बीवी के बीच जुदाई कराके लौटता है। शैतान अपने उस साथी को अपने करीब करता है, उसका मर्तबा बढ़ाता है और उसे गले से लगा कर कहता है कि तूने वाकई बड़ा काम किया है।" (मुस्लिम—7106 —बुख़ारी —5673)

**(3) नज़र बन्दी का जादूः**— इस जादू की वजह से किसी चीज़ की हालत या असलियत नहीं बदलती अलबत्ता देखने वालों को रूकी हुई चीज़ हरकत करती या चलती हुई चीज़ ठहरी हुई नज़र आती है। या फिर छोटी चीज़ बड़ी या बड़ी चीज़ छोटी दिखाई देती है। इस जादू के बारे में कुरआन हमें बतलाता है कि "उन जादूगरों ने मूसा (अलैहि0) से कहा चाहे तो आप डालिये या हम ही डालें? मूसा (अलैहि0) ने फ़रमाया कि तुम ही डालो। पस जब उन्होंने (अपनी रस्सियों व लाठियों को मैदान में) डाला तो लोगों की नज़र बन्दी कर दी और उन को खूब डरा कर दहशत में डाल दिया व एक तरह का बड़ा जादू दिखाया।" (आराफ़—आयत—116)

इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने कसीर रह0 लिखते हैं "यह सिर्फ़ नज़र बन्दी थी हक़ीक़त में रस्सियों व लाठियों का वजूद नहीं बदला था, यानि वोह सांप नहीं बनी थी। बल्कि लोगों को वोह जिन्दा सांपों की तरह दिखाई देने लगी थी। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है "अब तो मूसा (अलैहि0) को उनकी रस्सियां और लाठियां जादू व नज़र बन्दी की वजह से ऐसी दिखने लगी, जैसे कि दौड़ती हों।" (ताहा—आयत—66)

इब्ने कसीर रह0 कहते हैं कि सबसे पहले मूसा (अलैहि0) की आंखों

पर जादू हुआ, फिर फ़िरऔन की और फिर आम तमाशाइयों की आंखों पर। हर जादूगर ने अपनी–अपनी रस्सी और लाठी फैंकी तो हजारों की तादाद में बहुत बड़े–बड़े सांप नजर आने लगे, जो ऊपर तले एक दूसरे से लिपट रहे थे। इमाम सुद्दी रह० कहते हैं कि तीस हज़ार से ज़्यादा जादूगर थे और उनमें से हर एक के पास रस्सी और लाठी थी।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द–3 सफ़ा–394)

## जादू के इलाज के तरीके

(1) हाफिज़ इब्ने कय्यिम रह० के मुताबिक पहला तरीका यह है कि जादू वाली चीज़ को तलाश करके उसे खत्म कर दिया जाए। जैसा कि रसूल सल्ल० से साबित है कि "जब आप सल्ल० पर जादू हुआ तो आप सल्ल० ने अल्लाह से उस (जगह या जादू) के बारे में सवाल किया। अल्लाह ने (दो फरिश्तों के ज़रिये) आप सल्ल० को वह जगह (कुआं) बतला दी आप सल्ल० ने उस कुएं से वोह चीज़े निकलवाई। यह एक कन्घी, कुछ बाल और एक नर खजूर का खोशा था। जब आप सल्ल० ने उसे खत्म किया तो बिल्कुल तन्दरूस्त हो गए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर–जिल्द 6–सफा 689, बुख़ारी–5765

(2) जिस जगह पर जादू की वजह से दर्द मेहसूस हो वहां से गन्दा खून निकलवा दिया जाए। जब आप सल्ल० पर जादू हुआ तो आप सल्ल० ने (भी) सींगी लगवाई थी।" (जादुल मआद–जिल्द–3 सफा–361, इब्ने माजा 3480, मुस्लिम – 2206)

(3) तीसरा तरीका कुदरती दवा (कुरआनी आयात, सूरह इखलास, फलक व नास, अज़कार व दुआंए) का है। चूंकि जादू ख़बीस रूहों के असरात की वजह से होता है। लिहाज़ा उनके असरात को कुरआन की आयतों, अल्लाह के ज़िक्र व दुआओं से ही रद्द किया जा सकता है। यह इलाज जितना मजबूत और ज़्यादा होगा, उतना ही ज्यादा फायदेमन्द होगा।

जादू के असर को ख़त्म करने के लिए इन कुरआनी आयात का पढ़ना बेहद फायदे मन्द है–

(1) आयतल कुर्सी (बकराह–आयत–255)
(2) सूरह बकराह की आख़िरी दो आयतें (285–286)
(3) सूरह आराफ़– आयत–117 से 122
(4) सूरह युनुस– आयत–79से 82
(5) सूरह ताहा– आयत– 65 से 70
(6) सूरह – काफिरून
(7) सूरह– इख़लास
(8) सूरह– फलक
(9) सूरह – नास

अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी ख़ताओं व गुनाहों से दर गुजर करे हमें हर बुरी बला से महफ़ूज़ रखे और अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639
9887239649